shrInivAsagadyam

श्रीनिवासगद्यम्

Document Information

Text title : shrIshrInivAsagadyam

File name : shrInivAsagadyam.itx

Category : gadyam, vishhnu, venkateshwara, stotra, vishnu

Location : doc_vishhnu

Author : shrIraNgasUri

Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Source : Venkatesha Kavyakalapa

Latest update : June 10, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीनिवासगद्यम्

॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीवेङ्कटाद्रिनिलयः कमलाकामुकः पुमान् ।
अभङ्गुर विभूतिर्नस्तरङ्गयतु मङ्गलम्
श्रीमदखिल महीमण्डल मण्डन धरणिधर मण्डलाखण्डलस्य ॥ १॥

निखिल सुरासुर वन्दित वराह क्षेत्र विभूषणस्य ॥ २॥

शेषाचल गरुडाचल वृषभाचल नारायणाचलाञ्जनाचलादि शिखरि
मालाकुलस्य ॥ ३॥

नाथमुख बोधनिधि वीथिगुण साभरण सत्त्वनिधि तत्त्वनिधि
भक्तिगुणपूर्ण श्रीशैल पूर्ण गुणवशंवद परमपुरुष कृपापूर
विभ्रमदतुङ्गशृङ्ग गलद्गगन गङ्गासमालिङ्गितस्य ॥ ४॥

सीमातिगगुण रामानुज मुनि नामाङ्कित बहुभूमाश्रय सुरधामा लयवनरामा
यतवनसीमा परिवृत विशङ्कटतट निरन्तर विजृम्भित भक्तिरस
निर्झरानन्तार्याहार्य प्रस्रवण धारापूर विभ्रमद सलिलभर भरित
महा तटाकमण्डितस्य ॥ ५॥

कलिकर्दममलमर्दन कलितोद्यम विलसद्यमनियमादिम मुनिगण निषेव्यमाण
प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल समज्जननमज्जन निखिल पापनाशन पापनाशन
तिर्थाध्यासितस्य ॥ ६॥

मुरारि सेवक जराधिपीडित निरार्तिजीवन निराशभूसुर वरातिसुन्दर
सुराङ्गना रतिकराङ्ग सौष्ठव कुमारताकृति कुमारतारक
समापनोदय दमानपातक महापदामय विहापनोदित सकल भुवन विदित
कुमारधाराभिधान तिर्थाधिष्ठितस्य ॥ ७॥

धरणि तलगत सकलहत कलिलशुभ सलिलगत बहुलविविध मलहति
चतुर रुचिरतर विलोकमात्रविदलित विविध महापातक स्वामिपुष्करिणी

समेतस्य ॥ ८॥

बहुसङ्कट नरकावट पतदुत्कट कलिकङ्कट कलुषोद्भट जनपातक
विनिपातक रुचिनाटक करहाटक कलशाहृत कमलारत शुभमज्जन
जलसज्जन भरित निजदुरित हतिनिरत जनसतत निरर्गलपेपीयमान
सलिल सम्भृत विशङ्कट कटाहतीर्थ भूषितस्य ॥ ९॥

एवमादिम भुरिमञ्जिम सर्वपातक गर्वहापक सिन्धुडम्बर
हारिशम्बर विविधविपुल पुण्यतीर्थ निवह निवासस्य ॥ १०॥

श्री वेङ्कटाचलस्य ॥ ११॥

शिखरशेखर महाकल्प शाखी ॥ १२॥

खर्वीभवदतिगर्वि कृतगुरुमेर्विश
गिरिमुखोर्वीधरकुलदर्वीकर दयितोर्वी धरशिखरोर्वी सतत
सदुर्वी कृतिचणनवघनगर्वचर्वणनिपुण तनुकिरण मसृणित
गिरिशिखरशेखर तरुनिकर तिमिरः ॥ १३॥

वाणीपति शर्वाणीदयितेन्द्राणीश्वरमुखनाणीयो रसवेणी निभ शुभवाणी
नुतमहिमाणी यस्तरकोणी भवदखिलभुवन भवनोदरः ॥ १४॥

वैमानिक गुरुभूमाधिक गुण रामानुज कृतधामाकर करधामारिदर
ललामाच्छ कनक दामायित निजरामालयनवकिसलयमय तोरण
मालायितवनमालाधरः ॥ १५॥

कालाम्बुद मालानिभ नीलालक जालावृत बालाब्ज सलीलामलफालाङ्क
समूलामृत धाराद्वयावधीरण धीरललिततर विशदतर घन
घनसारमयोर्ध्वपुण्ड्र रेखाद्वयरुचिरः ॥ १६॥

सुविकस्वरदलभास्वरकमलोदरगतमेदुरनवकेसरततिभासुरपरिपिञ्जर-
कनकाम्बरकलितादरललितोदरतदालम्बजम्भरिपुमणिस्तम्भ-
गम्भीरिमदम्भस्तम्भन समुज्जृम्भमाणपीवरोरुयुगल-
तदालम्बपृथुलकदलीमुकुलमदहरणजङ्घालजङ्घायुगलः ॥ १७॥

नव्यदल भव्यकल पीतमल शोणिमल सन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजलकारि
बलशोणतल पत्कमलनिजाश्रय बलबन्दीकृत शरदिन्दुमण्डली
विभ्रमदादभ्रशुभ्र पुनर्भवाधिष्ठिताङ्गुली
गाढनिपीडित पद्मासनः ॥ १८॥

जानुतलावधिलम्बिविडम्बित वारणशुण्डा दण्डविजृम्भित नीलमणिमय
कल्पकशाखा विभ्रमदायि मृणाललतायत समुज्ज्वलतर कनक
वलयवेल्लितैकतर बाहुदण्डयुगलः ॥ १९॥

युगपदुदित कोटिखरकर हिमकर मण्डल जाज्वल्यमान सुदर्शन
पाञ्चजन्य समुत्तुङ्गित शृङ्गापरबाहुयुगलः ॥ २०॥

अभिनवशाणा समुत्तेजित महामहानीलखण्ड मदखण्डननिपुण नवीन
परितप्त कार्तस्वरकवचित महनीय पृथुलसालग्राम परम्परागुम्फित
नाभिमण्डलपर्यन्त लम्बमानप्रालम्बदीप्ति
समालम्बित विशालवक्षस्थलः ॥ २१॥

गङ्गाझरतुङ्गाकृतिभङ्गावलिभङ्गावह सौधावलि बावह धारानिभ
हारावलि दूराहत गेहान्तरमोहावह महिम मसृणित महातिमिरः ॥ २२॥

पिङ्गाकृतिभृङ्गारुनिभाङ्गार दलाङ्गामल निष्कासित दुष्कार्यघ
निष्कावलि दीपप्रभ नीपऽच्छवि तापप्रद कनकमालिका
पिशङ्गितसर्वाङ्गः ॥ २३॥

नवदलित दलवलित मृदुललित कमलतति मदविहति चतुरतर
पृथुलतर सरसतर कनकसर मयरुचिर
कण्ठिका कमनीयकण्ठः ॥ २४॥

वाताशनाधिपतिशयन कमनपरिचरण रतिसमेताखिल फणधरतति
मतिकर कनकमय नागाभरण परिवीताखिलाङ्गावगमित शयन भूताहिराज
जातातिशयः ॥ २५॥

रविकोटी परिपाटी धरकोटिर वराटीकितवाटि रसधाटि धरमणिगण किरण
विसरण सततविधुत तिमिरमोहगर्भगेहः ॥ २६॥

अपरिमित विविधभुवनभरिताखण्ड ब्रह्माण्डमण्डल पिचण्डिलः ॥ २७॥

आर्यधुर्यानन्तार्य पवित्रखनित्रपात पात्रीकृत निजचुबुकगत व्रणकिण
विभूषणवहन सूचितश्रित जनवत्सलतातिशयः ॥ २८॥

मड्डुडिण्डिम डमरुझर्झर काहली पटहावली मृदुमर्दलालि मृदङ्ग
दुन्दुभि ढक्किकामुख हृद्यवाद्यक मधुरमङ्गल नादमेदुर विसृमर
सरसगान रसरुचिर सन्ततसन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव

संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः ॥ २९॥

श्रीमदानन्दनिलयविमानवासः ॥ ३०॥

सततपद्मालयापदपद्मरेणुसञ्चित वक्षस्स्थलपटवासः ॥ ३१॥

श्रीश्रीनिवासस्सुप्रसन्नो विजयताम् ॥ ३२॥

श्रीरङ्गसूरिणेदं श्रीशैलानन्तसुरिवंश्येन ।
भक्त्या रचितं हृद्यम् गद्यम् गृह्णातु वेङ्कटेशानः ॥

॥ श्री श्रीनिवासगद्यं सम्पूर्णम् ॥

From a telugu book veNkaTeshakAvyakalApa
Encoded and proofread by Malleswara Rao Yellapragada
malleswararaoy at yahoo.com

shrInivAsagadyam
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*